

## Padma Shri



### **SMT. RANGAMMAL ALIAS PAPPMMAL**

Smt. Rangammal alias Pappmmal is an agriculturist from Coimbatore district, Tamil Nadu.

2. Born on 10<sup>th</sup> March, 1916, Smt. Pappmmal lost her parents at young age and she was raised by her maternal grandmother. She managed her livelihood by running a grocery shop. Then she started a hotel, with its income she bought 10 acres land and started organic farming in that land.

3. Smt. Pappmmal has been farming Millets (such as Thinai, Saamai, Raagi, Solam, Kambu ), Pulses (such as Bengal gram, Black gram, Black eyed beans, Broad beans, Chick peas, Cow peas, Green moong dal, Horse gram, red gram) and vegetable for several years. She has been using organic fertilizers like coddung and the plant residues from her farm as the main source of fertilizers. She also encouraged her neighbours to use decomposed Coddung, Neem, Kolinji (tephrosia purpurea), Avaram (senna ariculata ) leaves as fertilizers.

4. Smt. Pappmmal has been associated with various organization in varied capacities. She served as an elected ward member of Thekkampatty Panchayat, Coimbatore in 1959; elected as a councilor in the Karamadai Panchayat Union, Coimbatore in 1964; President, Maathar Sangam (Women Association) to render services to the village women etc.

5. Smt. Pappmmal has been one of the active members of Farmer Discussion Group (FDG) Tamil Nadu Agricultural University in Coimbatore India (TNAU) for the last 45 years. Her land is being visited by TNAU officers often. They have introduced advanced technology in Agricultural methods and also encouraged her dedication and interest through a lot of awards and appreciations. She has earned recognition from 12 different vice chancellors of TNAU Coimbatore.



### श्रीमती रंगम्माल अलयस पापम्माल

श्रीमती रंगम्माल अलयस पापम्माल तमिलनाडु कोयंबटूर जिले की एक किसान हैं।

2. 10 मार्च 1916 को जन्मी, श्रीमती पापम्माल ने बाल्यकाल में ही अपने माता-पिता को खो दिया था। उनका लालन-पालन उनकी नानी ने किया। वह किराने की दुकान से अपनी आजीविका चलाती थीं। फिर उन्होंने एक होटल शुरू किया और अपनी आय से उन्होंने 10 एकड़ जमीन खरीदकर उस पर जैविक खेती शुरू की।
3. श्रीमती पापम्माल कई वर्षों से बाजरा (जैसे थिताई, सामाई, रागी, सोलम, काम्बू), दालें (जैसे बंगाल चना, काला चना, काली आंखों वाली सेम, चौड़ी सेम, चिक मटर, काउ मटर, हरी मूंग दाल, घोड़ा चना, लाल चना) और सब्जी की खेती कर रही हैं। वह जैव उर्वरकों के रूप में गोबर और अपने खेत के पौधों के अवशेष का प्रयोग कर रही हैं। उन्होंने अपने पड़ोसियों को भी जैव उर्वरक के तौर पर अपघटित गोबर को इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया।
4. श्रीमती पापम्माल विभिन्न संगठनों में अलग-अलग पदों पर आसीन रही हैं। उन्होंने 1959 में कोयंबटूर के थेक्कामपट्टी पंचायत के निर्वाचित वार्ड सदस्य के रूप में कार्य किया; 1964 में वह करमादाई पंचायत संघ, कोयंबटूर की पार्षद के रूप में चुनी गईं; उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को सेवाएं प्रदान करने के लिए माथर संगम (महिला संघ) की अध्यक्षता की।
5. श्रीमती पापम्माल पिछले 45 वर्षों से कोयंबटूर स्थित तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के किसान परिचर्चा समूह की एक सक्रिय सदस्य रही हैं। तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी अक्सर उनकी जमीन का दौरा करते हैं और उन्होंने कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकी प्रयोग करने में उनकी मदद की है। उन्होंने बहुत सारे पुरस्कार और प्रशंसा के माध्यम से उनके समर्पण और रुचि को भी प्रोत्साहित किया है। श्रीमती पापम्माल ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर के 12 विभिन्न कुलपतियों की भी सराहना प्राप्त की है।